स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन

ForU.G. Part-3,Paper-6

Lecture by:ARUN KUMAR RAI
Asst.Professor,Dept.of History,
Maharaja College,Ara.

Introduction

- स्वदेशी आंदोलन बंगाल विभाजन के विरोध में एक आंदोलन के रूप में पैदा हुआ जो केवल बंगाल तक सीमित नहीं रहा बल्कि उससे बाहर भी इस आंदोलन का विस्तार हुआ।
- इसके साथ ही उग्र राष्ट्रीयता का उद्भव हुआ।
- इसका दायरा महज राजनीतिक तक सीमित नहीं था बल्कि कला, साहित्य ,संगीत, विज्ञान ,उदयोग एवं अन्य क्षेत्रों पर भी इस आंदोलन का असर हुआ।

स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत:

- स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की विधिवत घोषणा अगस्त 1905 के टाउन हॉल के ऐतिहासिक बैठक में की गई।
- स्वदेशी आंदोलन के नेताओं में प्रमुख थे सुरेंद्रनाथ बैनर्जी, कृष्ण कुमार मित्र ,पृथ्वी चंद्र राय, विपिन चंद्र पाल ,लाला लाजपत राय आदि।
- 16 अक्टूबर 1905 को विभाजन के दिन पूरे बंगाल में **शोक दिवस** के रूप में मनाया गया।

स्वदेशी आंदोलन का कार्यक्रम:

- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
- सरकारी स्कूलों, अदालतों, उपाधियों ,सरकारी नौकरियों की बहिष्कार
- हड़ताल करके प्रशासन को पंगु बनाना
- महिलाओं द्वारा विदेशी दुकानों पर धरने देना ,
- रचनात्मक कार्यक्रमों पर बल जिसके तहत सामाजिक सुधार लागू करना इसमें बाल विवाह दहेज शराब खोरी जैसे सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाना शामिल ।
- आत्मनिर्भरता के लिए स्वदेशी अथवा राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया गया
- स्वदेशी उदयोगों एंव कल कारखानों के निर्माण पर बल दिया गया।

कार्यपद्दति :

- समितियों का गठन करके जनता को लामबंद करना
- मजदूरों की हड़ताल का आयोजन कर जनता को लामबंद करना
- धार्मिक प्रतीकों एवं नारों का उपयोग कर जनता को संगठित करना जैसे गंगा स्नान रक्षाबंधन वंदे मातरम आदि ।
- पारंपरिक त्यौहारों ,धार्मिक मेलों ,लोक परंपराओं, लोक संगीत ,नाट्य मंच के माध्यम से आंदोलन का प्रचार प्रसार करना।
- तिलक ने गणपति महोत्सव , शिवाजी जयंती के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन को लोकप्रिय बनाया।

आंदोलन का प्रसार:

- बंगाल विभाजन से शुरू हुआ यह आंदोलन सिर्फ बंगाल तक सीमित नहीं रहा बल्कि समूचे राष्ट्र में फैल गया
- लोकमान्य तिलक ने मुंबई तथा पुणे में इस आंदोलन का प्रचार किया।
- अजीत सिंह एवं लाला लाजपत राय ने पंजाब व उत्तर प्रदेश में इस आंदोलन को पहुंचाया।
- सैयद हैदर रजा ने दिल्ली में इसे प्रसार किया।
- चिदंबरम पिल्ले एवं बिपिन चंद्र पाल ने इसे मद्रास प्रेसिडेंसी में लोकप्रिय बनाया।

आंदोलन का सामाजिक आधार:

- विद्यार्थियों ने प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने स्वदेशी को अपनाया प्रचार किया तथा विदेशी सामान बेचने वाले दुकान के आगे धरना दिया।
- भारतीय इतिहास में पहली बार महिलाएं घर से बाहर निकली तथा धरने एवं जुलूस में शामिल होकर आंदोलन में भाग लिया।
- बड़े जमींदार भी आंदोलन में शामिल हुए लेकिन किसान इस आंदोलन से प्राय:अलग रहे ।
- बहुसंख्यक मुसलमानों ने आंदोलन मेंभागीदारी नहीं निभाईविशेषकर खेतिहर मुसलमानों नें। ढाका के नवाब सलीमुल्लाह ने स्वदेशी आंदोलन का विरोध किया।

कांग्रेसी एवं स्वदेशी आंदोलन:

- स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव कांग्रेस के आंतरिक राजनीतिक पर व्यापक पड़ा। इसने उदारवादी और गरमपंथियो के बीच की खाई गहरी कर दी जिसकी अंतिम परिणति कांग्रेस के विभाजन में हुई।
- कांग्रेस के **बनारस अधिवेशन**(1905) जिसकी अध्यक्षता गोपाल कृष्ण गोखले ने किया में **बहिष्कार** के प्रश्न को लेकर मतभेद उभरकर सामने आए ।
- नरमपंथी बहिष्कार और स्वदेशी आंदोलन को बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे जबकि गरम पंथी इस आंदोलन को पूरे देश में फैलाना चाहते थे।
- 1907में यह मतभेद चरम पर पहुंच गया जिसके परिणाम स्वरूप सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन हो गया।

स्वदेशी आंदोलन और सरकारी प्रतिक्रिया:

- सरकार ने अक्टूबर 1905में **कार्लाइल सर्कुलर** निकाला।जिसके द्वारा सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों एवं कॉलेज के प्रधानाध्यापकों को निर्देश दिया यह कि वे छात्रों को आंदोलन से अलग रखें अन्यथा उनको दी जाने वाली सरकारी सहायता बंद कर दी जाएगी।
- वंदे मातरम के गायन पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- बहिष्कार आंदोलन को राजद्रोहात्मक और मुस्लिम विरोधी मानकर उसे कुचल देने का प्रयास किया ।
- सरकार ने दमन के अतिरिक्त कूटनीति का भी सहारा लिया। एक तरफ मुस्लिम सांप्रदायिकता को उभारने की कोशिश की गई तो दूसरी तरफ सुधारों का दिखावा किया जिससे उदारवादी कांग्रेसी उनके समर्थक बन जाए।

स्वदेशी आंदोलन का अंत:

- स्वदेशी आंदोलन की उर्जा 1908 के मध्य तक आते-आते खत्म हो गई।
- सरकार ने कठोर दमन चक्र चलाया अनेक महत्वपूर्ण नेतागण को जेल में डाल दिया।
- 1907 की कांग्रेस की फूटने आंदोलन को कमजोर कर दिया।
- अरविंद घोष एवं बिपिन चंद्र पाल ने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया जिससे आंदोलन नेतृत्व विहीन हो गया।
- स्वदेशी आंदोलन के पास कोई प्रभावी संगठन नहीं था जैसा कि बाद की गांधीवादी आंदोलन में दिखता है।

स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव:

- स्वदेशी आंदोलन में राष्ट्रवाद के वैचारिक आधार को मजबूत बनाया।
- अनेक भारतीय उद्योगों की स्थापना भी जैसे बी. सी. राय की बंगाल केमिकल फैक्ट्री। इसके अतिरिक्त कपड़ा मिलें,साबुन ,माचिस के कारखाने ,बीमा कंपनियां अस्तित्व में आईं।
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों की स्थापना हुई जैसे बंगाल नेशनल कॉलेज। 1906 में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद का गठन हुआ । तकनीकी शिक्षा के लिए बंगाल इंस्टीच्यूट की स्थापना की गई।
- बांग्ला साहित्य का भी व्यापक विकास हुआ। रविंद्र नाथ टैगोर ,रजनीकांत सेन ,द्विजेंद्रनाथ राय मुकुंद दास सैयद मुहम्मद आदि के गीत प्रेरणा स्रोत बने। टैगोर लिखित आमार सोनार बांग्ला 1971 में बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना।

- दक्षिणा रंजन मित्र मजूमदार ने ठाकुरमार झुली (दादी मां की कथाएं) लिखी जो आज भी बच्चों के बीच लोकप्रिय है।
- कला के क्षेत्र में स्वदेशी आंदोलन ने भारतीय कला पर पश्चात आधिपत्य को तोड़ा।अवनींद्र नाथ टैगोर ने मुगलों और राजपूतों की समृद्ध स्वदेशी पारंपरिक कलाओं एवं अजंता की चित्रकला से प्रेरणा लेकर कार्य शुरू किया। 1906 में स्थापित इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट्स की छात्रवृत्ति भारतीय कला मर्मज्ञ नंदलाल बोस को मिली।
- विज्ञान के क्षेत्र में जगदीश चंद्र बोस प्रफुल्ल चंद्र राय की उपलब्धियां भी महत्वपूर्ण है।
- राष्ट्रीय आंदोलन के सामाजिक दायरे का विकास हुआ
- राष्ट्रीय आंदोलन राजनीतिक उदारवाद से राजनीतिक उग्रवाद की ओर बढ़ा।
- जन संगठन पर आधारित आंदोलन ,बहिष्कार,स्वदेशी की विचारधारा ,निष्क्रिय प्रतिरोध, धरना प्रदर्शन आदि आंदोलन के नए तरीके बन गये।

स्वदेशी आंदोलन का नकारात्मक प्रभाव:

- आंदोलनकारियों दवारा अपनाए गए धार्मिक प्रतीकों एवं नारों ने सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया सांप्रदायिक राजनीति के कारण1907में बंगाल में हिंदू मुस्लिम। दंगे हुए।
- नरमपंथी चरमपंथी के बीच वैचारिक संघर्ष बढा़जिससे 1907में कांग्रेस का विभाजन हुआ।
- आंदोलन प्रायः शहरी क्षेत्र तक सीमित रहा।
- किसानों की समस्या को नहीं उठाया गया फलतः किसान इस आंदोलन से अलग रहे।